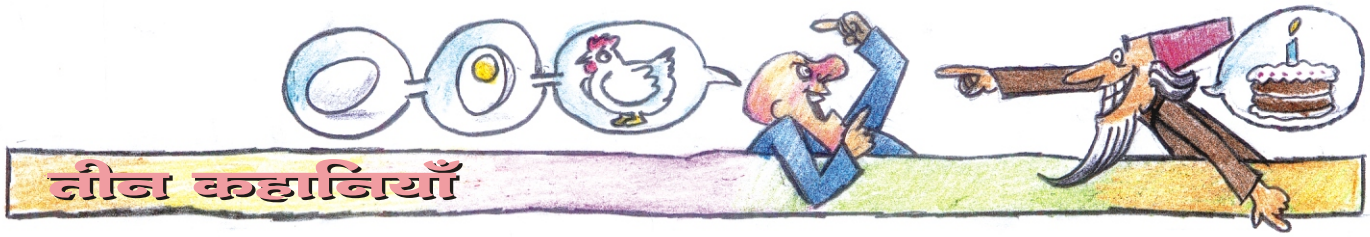

तीन कहानियाँ

ढुँढाई गलत जगह पर

पड़ोसी ने मुल्ला नसरुद्दीन को घुटनों पर चलते देखा तो पूछा, "मुल्ला जी क्या कुछ ढूँढ रहे हैं?"
"हाँ, मेरी चाबियाँ।" नसरुद्दीन बोले।
दोनों मिलकर चाबियाँ ढूँढने लगे। कुछ देर बाद पड़ोसी ने पूछा, "आप ठीक-ठीक बता सकते हैं कि वो खोई कहाँ थीं?"
"घर पर।" मुल्ला का जवाब था।
"क्या...! तो हम यहाँ क्यों ढूँढ रहे हैं?"
"यहाँ रोशनी जो है...।" मुल्ला का टका-सा जवाब था।

अण्डे

नसरुद्दीन अण्डे बेचकर अपना गुज़ारा करते थे। एक दिन एक आदमी उनकी दुकान में आया और बोला, "बताओ मेरे हाथ में क्या है?"
"उसके बारे में कुछ तो बताओ।" नसरुद्दीन ने पूछा।
"कुछ क्या बहुत कुछ बताता हूँ – उसका आकार अण्डे जैसा है, देखने में भी अण्डे जैसा है, स्वाद और खुशबू भी अण्डे जैसी है, बीच में वो पीला-सफेद रंग का है, पकने से पहले वो पतला-पतला होता है और पककर सख्त हो जाता है। एक और बात... वो हमें मुर्गी से मिलता है।"
"अहा समझ गया!" मुल्ला जी चिल्लाए, "वो किसी तरह की केक है।"

हाथी और चूहा

हाथी बहती नदी में मज़े से डुबकियाँ लगा रहा था। अचानक रंग में भंग पड़ा।
चूहा दौड़ते हुए आया और चिल्लाया, "बाहर निकल। निकल बाहर।"
"क्यों?"
"क्यों व्यों कुछ नहीं। बस निकल। तब बताऊँगा।"
"तब तो नहीं निकलता। जा क्या कर लेगा।"
फिर कुछ सोच हाथी पानी से बाहर निकल आया। "हाँ, अब बता। क्यों चिल्ला रहा था।"
"देखना था कहीं तूने मेरी चड्डी तो नहीं पहनी है?"

द सांग ऑफ द बर्ड से साभार